सच्ची पहचान की खोज

फ्रैंकलीन द्वारा नोट्स

खोज प्रशन के साथ आरम्भ होती है:

(15) तुम मुझे क्या कहते हो? मत्ती 16:15–20

- हर एक मनुष्य को इस प्रशन का उत्तर देना है।
- हर एक मनुष्य का दैनिक जीवन, भविष्य और अनन्तकाल में प्रवेश, उनके उत्तर पर नर्भर करता है।
- आपके उत्तर पर इस जीवन में आपकी आशिषें निर्भर हैं।

(16) शमौन पतरस ने उत्तर दिया, कि तू जीवते परमेश्वर का पुत्र मसीह है।

- शिमौन ने सही उत्तर देने के परिणामस्वरुप अपने जीवन के अर्थ, जीवन के उद्देश्य, अपनी सेवकाई और सबसे अधिक महत्वपूर्ण अनन्त जीवन को खोजा।
- शिमौन तो पहले से ही प्रभु के पीछे चल रहा था, परन्तु जितना अधिक उसने यह समझा कि यीशु कौन है, उतना अधिक इसने उसके जीवन को बदला।

लूका 5:1–11 शिमौन की यीशु से भेंट हुई, और उस पर यह प्रकट होना आरम्भ हो गया कि यीशु कौन है। सर्वप्रथम : एक अच्छा गुरु। फिर मछलियां पकड़ने के आर्श्चयकर्म के बाद शिमौन ने उस सब के प्रभु के रुप में पहचाना। उस आश्चर्यकर्म ने यह प्रकट किया कि वह कौन है। सर्वशक्तिमान परमेश्वर – यीशु मसीह की सच्ची पहचान को प्रकट करने के लिए चमत्कार होते हैं तथा हमें इनकी आवश्यकता है।

(17) यीशु ने उस को उत्तर दिया, कि हे शमौन योना के पुत्र, तू धन्य है; क्योंकि मांस और लोहू ने नहीं, परन्तु मेरे पिता ने जो स्वर्ग में है, यह बात तुझ पर प्रगट की है।

- यीशु ने पहले उसको ''पृथ्वी पर उसकी पहचान'' योना के पुत्र कह कर सम्बोधित किया।
- यह खोज कि यीशु वास्तव में कौन हैं, केवल प्रकाशन के द्वारा ही हो सकती है।

  यीशु ने कहा, '' कोई नहीं जानता कि पुत्र कौन है केवल पिता और पिता कौन है यह भी कोई नहीं जानता, केवल पुत्र के और वह जिस पर पुत्र उसे प्रकट करना चाहे। लूका 10:22

  हमारे पिता ने अपने पुत्र को हम सब पर प्रकट किया है, और यीशु ने हमारे पिता को हम सब पर प्रकट किया, जिस प्रकार उसने पतरस के साथ किया।

(18) और मैं भी तुझ से कहता हूं, कि तू पतरस (पतरौस – एक छोटी चट्टान) है।

- फिर, यीशु शिमौन पर उसकी स्वर्गीय पहचान को प्रकट करते हैं – वह नाम जो उसके स्वर्गीय पिता ने उसे दिया था इससे पहले कि वह पैदा होता।

वह नाम जिससे वह स्वर्ग में जाना जाता है।

प्रकाशितवाक्य 13:8 और 17:8 ... जिन के नाम जगत की उत्पत्ति के समय से जीवन की पुस्तक में लिखे गए ... प्रकाशितवाक्य 2:17 मैं उसे नया नाम ... दूंगा।

(बाइबल में 13 बार इसका जिक्र है)

इफिसियों 1:4 उस ने हमें जगत की उत्पति से पहिले उस में चुन लिया

जगत की उत्पत्ति से पहले, इससे पहले कि आपका जन्म होता, आपको चुन लिया गया और नाम दिया गया। आप उसकी योजना थे।

लूका 19:5 जक्कई से यीशु का परिचय नहीं कराया गया। वह उसका नाम जानता था।

उत्पत्ति 17:5 सो अब से तेरा नाम अब्राम न रहेगा परन्तु तेरा नाम इब्राहीम होगा क्योंकि मैं ने तुझे जातियों के समूह का मूलपिता ठहरा दिया है।

यर्मयाह 1:4–8 यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा: (5) "गर्भ में तेरी रचना करने से पहले मैं तुझे जानता था, और तेरे उत्पन्न होने से पहले मैंने तेरा अभिषेक किया।"

निर्गमन 33:17 यहोवा ने मूसा से कहा, "मैं यह काम भी जिसके विषय में तूने कहा है, करुंगा; क्योकि तूने मेरी कृपा–दृष्टि प्राप्त की है, और मैं तुझे नाम से जानता हूं।"

2 तीमुथियुस 2:19 तौभी परमेश्वर की पक्की नेव बनी रहती है, और उस पर यह छाप लगी है, कि प्रभु अपनों को पहिचानता है

यहां से परिवार की योजना आरम्भ होती है। यह ऐसा है मानो आपका जन्म विदेश में हुआ है जो किसी दुष्ट राजा के अधीन है जिसका दावा है कि हम उसके हैं। तथा उसके दुष्ट तरीकों से हमारी शिक्षा पाई है। इस विदेशी भूमि में रहते हुए, झूठ को मानते हुए और उसकी दुष्टाई से जीते हुए, हम इसे अपनी पहचान के रुप में ग्रहण कर लेते हैं।

परन्तु यह सच नहीं है। हम राजा के सन्तान है, राजकुमार और राजकुमारियां हैं परन्तु हम यह जानते नहीं हैं। हम सोचते हैं कि हम सड़क पर रहने वाले बच्चों की तरह, जिनकी कोई पहचान नहीं और जिनके पास कुछ भी नहीं, उनकी तरह कंगाल हैं। यह दरिद्र के कपड़ों में राजकुमार की कहानी के समान है – केवल वही जानते हैं कि वो कौन थे।

- यह बहुत महत्वपूर्ण हैं कि हम जाने कि हम वास्तव में कौन हैं।

होशे 4:6 अज्ञानता के कारण मेरी प्रजा नाश हो जाती है।
यशायाह 5:13 मेरी प्रजा के लोग अपनी अज्ञानता के कारण बन्धुवाई में जाते हैं।
यूहन्ना 8:32 तुम सत्य को जानोगे और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा।

- हम आज ऐसा जीवन जी रहे हैं जो हम गलत रीति से सोचते हैं कि हम हैं। शिमौन ने सोचा कि वह एक मछुआरा है।

- हम अपनी पहचान के चुराए जाने के शिकार हैं। हमने केवल अपनी संसारिक पहचान को ही जाना है, माना है तथा उसे जीया हैं।
- केवल अपनी संसारिक पहचान को जानना हमें एक स्थिति में जंजीरों से बांध देती है।
- जब हम अपनी स्वर्गीय पहचान को जान लेते हैं तो हम अपने अतीत से स्वतन्त्र हो जाते हैं।
- हम अपनी सच्ची पहचान की खोज करेंगे जब हम यह जानेंगे :

  पहला – यीशु कौन है : तुम मुझे क्या कहते हो ?

  – और –

  दूसरा – जब हम यह जानेंगे कि हमारा सच्चा पिता वास्तव में कौन है।

  कोई नहीं जानता कि ... पिता कौन है यह भी कोई नहीं जानता, केवल पुत्र के और वह जिस पर पुत्र उसे प्रकट करना चाहे। लूका 10:22

जैसे जैसे यीशु को जानने का हमारा प्रकाशन बढ़ेगा – वैसे वैसे हमारा यह ज्ञान भी बढ़ेगा कि हमारा पिता वास्तव में कौन है जो हमारी सच्ची पहचान को प्रकट करेगा – हमें स्वर्ग में कैसे पहचाना जाता है – और इसके साथ ही – हमारी मंजिल।

- आपका यह मानना कि आप क्या हैं, आपके जीवन के उद्देश्य को प्रभावित और निर्देशित करेगा।
- अपनी स्वर्गीय पहचान को जानने से हमारे वह द्वार खुल जाता है जिससे हम अपने वास्तविक उद्देश्य और लक्ष्य को पूरा कर सकते हैं।
- आप यीशु को क्या मानते हैं? यह उसके साथ आपके सम्बन्ध को आकार देगा।
  - कुछ का यह मानना था कि वह : एक अच्छा मनुष्य / एक अच्छा शिक्षक / धर्म गुरु / बढ़ई था। वहीं कुछ का यह भी मानना था कि वह पागल या दुष्टात्मा ग्रसित था।

जिस प्रकार से आज आप उसको प्रतिउत्तर देते हैं, जिस प्रकार से आप रहते हैं, यह सब इस बात को प्रकट करता है कि आप वास्तव में उसे क्या समझते हैं । उदाहरण के लिए :

- वह तो केवल परमेश्वर है जो बहुत दूर स्वर्ग में विराजमान है, और उसे इस बात की कोई परवाह नहीं कि आज हमारे साथ क्या घट रहा है। इसलिए अपने जीवन में अपनी संसारिक पहचान को जीते हुए ... आगे बढ़ें।
- जैसा परमेश्वर का वचन उसे प्रगट करता है – सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर – जो वह है, क्या हमें इस पर विश्वास हैं और हमारा जीवन क्या यह प्रदर्शित करता है।
- हम किस हद तक यह विश्वास करते हैं कि वह प्रभु है? लूका 6:46

अतः सबसे पहले हम अपना ध्यान केन्द्रित करें : तुम मुझे क्या कहते हो?

कुलुस्सियों 1:13 –20 : उसके अपने प्रिय पुत्र में (14) जिस से हमें छुटकारा अर्थात् पापों की क्षमा प्राप्त होती है। (15) वह तो अदृश्य परमेश्वर का प्रतिरूप और सारी सृष्टि में पहिलौठा है।

- वह सर्वशक्तिमान परमेश्वर का प्रिय पुत्र है।
- वह छुटकारा देने वाला है – उसने पापों की क्षमा का मुल्य चुकाया, मुल्य जिसके द्वारा उसने वो सब वापस प्राप्त कर लिया और मोल ले लिया जो कुछ उसका था।
- वह पिता परमेश्वर के पूर्णतः समानता में – उसका प्रतिरुप है।

  यीशु ने कहा : जिस ने मुझे देखा है उस ने पिता को देखा है

- वह पहलौठा है – परमेश्वर पिता के समक्ष वह सर्वप्रथम स्थान में खड़ा है जिस से स्वर्ग और पृथ्वी पर, हर एक घराने का नाम रखा जाता है। इफिसियों 3:15।

  (हमारा परिवारिक नाम ''प्रेम'' हो सकता है, पृष्ठ 13 देखें)

  रोमियों 8:29 ''क्योंकि जिन्हें उस ने पहिले से जान लिया है उन्हें पहिले से ठहराया भी है कि उसके पुत्र के स्वरूप में हों(आपकी मंज़िल) ताकि वह बहुत भाइयों में (आपका परिवार) पहिलौठा ठहरे।''

(16)क्योंकि उसी में सारी वस्तुओं की सृष्टि हुई, स्वर्ग की हो अथवा पृथ्वी की, देखी या अनदेखी, क्या सिंहासन, क्या प्रभुतांए, क्या प्रधानताएं, क्या अधिकार, सारी वस्तुएं उसी के द्वारा और उसी के लिये सृजी गई हैं।

- वह सर्वोच्च ज्ञान है, सर्वज्ञानी है – सब जानता है
- वह स्वर्ग और पृथ्वी का और जो कुछ भी उसमें है : रसायन शास्त्र, भौतिक शास्त्र, गणित, वनस्पति–विज्ञान, वैमानिकी ... इत्यादि, सब वस्तुओं का सर्वोच्च निर्माता है। सभी भौतिक और आत्मिक नियमों का वह स्थापक है तथा उन्हें सम्भालता है।
- वह सर्वोच्च शक्ति है – उसने जो कुछ उसके मन में था उसे शब्दों के द्वारा हकीकत बना दिया और सब कुछ सजीव हो गया।

(17) और वही सब वस्तुओं में प्रथम है, और सब वस्तुएं उसी में स्थिर रहती हैं।

- वह अनन्त है, अल्फा और ओमेगा – जिसका कोई आरम्भ नहीं है और न ही कोई अन्त है – समय से अधिक महान और उससे पार, जो समय के द्वारा नहीं परन्तु स्वयं समय को नियन्त्रित करता है।
- वह हर एक और सभी में सर्वश्रेष्ठ स्थान रखता है।

- वह सारी सृष्टि का चुम्बकीय केन्द्र है – जिससे, और जिसके चारों ओर सभी वस्तुऐं परिक्रमा करती और अस्तित्व में रहती हैं।

  यदि आपका जीवन उसके चारों ओर नहीं घूम रहा, तो आप उसके समान नहीं तथा असमन्वय में हैं। आप में कम्पन है, आप हिल रहे हैं, सब वस्तुऐं आपस में टक्करा रही हैं तथा नुकसान हो रहा है।

(18) और वही देह, अर्थात् कलीसिया का सिर है; वही आदि है

- वह ज्ञान है, शासक है, व्यवस्थापक है, अपनी देह के ऊपर प्रभु है।

- वह आदि है, अल्फा है, मूल है प्रथम स्थान का एक मात्र अधिकारी

और मरे हुओं में से जी उठनेवालों में पहिलौठा कि सब बातों में वही प्रधान ठहरे।

- केवल उसी का प्रधान स्थान है और वही सर्वश्रेष्ठ है

(19) क्योंकि पिता की प्रसन्नता इसी में है कि उस में सरी परिपूर्णता वास करे।

- उसमें परमेश्वरत्व के सारे गुणों, सामर्थ और अधिकार सदेह वास करता है।
- वह सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर है।

(20) और उसके क्रूस पर बहे हुए लहू के द्वारा मेल मिलाप करके, सब वस्तुओं को उसी के द्वारा से अपने साथ मेल कर ले ...

- वही है और केवल वही है जो अपने शुद्ध, निर्दोष, और पवित्र लहू से पाप की दीवार तोड़ते हुए, और प्रभु परमेश्वर और मनुष्यों में मेल पुनःस्थापित करते हुए, तथा सब वस्तुओं को अपने साथ सही सम्बन्ध में वापस ला कर मेल करा सकता है।

इतिहास का संक्षिप्त सर्वेक्षण :

○ आदम और हव्वा / परमेश्वर की सबसे महान रचना / अपने स्वरुप में बनाया; स्वर्ग के दूतों ने उस आनन्द को देखा जो आदम और हव्वा ने परमेश्वर को दिया जब वे वाटिका में साथ–साथ चले।

○ दूतों ने उन्हें पाप करते और परमेश्वर से अलग होते भी देखा (यशायाह 59:2)। दूतों ने देखा कि मनुष्य को वाटिका से बाहर निकाल दिया गया, ज्योति से बाहर अन्धकार में, जीवन से बाहर मृत्यु में निकाल दिया, तथा शैतान को उन्होंने अपना राज्य दे दिया और उसकी सामर्थ के अधीनता में आ गए।

○ मैं विश्वास करता हूं कि इस महान पतन को देख कर दूतों ने कहा होगा : ''क्या किया जा सकता है? इसका कैसे छुटकारा हो सकता है? (प्रकाशितवाक्य 5:2)

○ तब स्वर्गदूतों ने प्रभु यीशु को अपने सिंहासन से उठकर खड़े होते और कहते देखा : ''पिता, मैं इन को तेरे लिए छुड़ाऊंगा।''

- वह ऐसा क्यों करेगा?

परमेश्वर ने जगत से बहुत प्रेम किया, तथा उसके स्वरुप में बने आदम और हव्वा उसके बच्चे थे। जिस ने तुम में अच्छा काम आरम्भ किया है, वही उसे यीशु मसीह के दिन तक पूरा करेगा। (फिलिप्पियों 1:6)

और इस प्रकार उसने यह किया :

फिलिप्पियों 2:6–8 (यीशु मसीह के विषय में बोलते हुए) जिस ने परमेश्वर के स्वरूप में होकर भी परमेश्वर के तुल्य होने को अपने वश में (कस कर पकड़ कर रखना) रखने की वस्तु न समझा।

उसके परमेश्वर होने का स्पष्ट वक्तव्य। (2 कुरि 4:4; यूहन्ना 5:18; 8:24,28,58; 10:30–33)

उसके लिए मिशन ज़्यादा महत्वपूर्ण था।

उसके लिए आप ज़्यादा महत्वपूर्ण हैं।

(7) अपने आप को ऐसा शून्य कर दिया, और दास का स्वरूप धारण किया, और मनुष्य की समानता में हो गया।

उसने अपने आप को शुन्य कर दिया, या समर्पित कर दिया :

○ अपना सिंहासन / अपना मुकुट / अपनी महिमा (यूहन्ना 17:5) / अपनी प्रतिष्ठा / पिता से भिन्न अपने परमेश्वरत्व के गुणों को इस्तेमाल करने का अधिकार। यूहन्ना 5:19,30

○ उसने अपनी परमेश्वरत्व या अपनी पहचान को नहीं त्यागा।

○ अपने आपको पिता के अधीनता में रख कर उसके लिए दास स्वरुप हो गया।

○ और वह मनुष्य बन गया।

स्वर्ग के सिंहासन की ऊंचाईयों से वह नीचे, नीचे, नीचे आ गया।

(8) और मनुष्य के रूप में प्रगट होकर अपने आप को दीन किया, और यहां तक आज्ञाकारी रहा, कि मृत्यु, हां, क्रूस की मृत्यु भी सह ली।

और वह जिसमें कोई पाप नहीं था, परमेश्वर का पवित्र पुत्र, जो पाप से घृणा करता था, "उसी को उस ने हमारे लिये पाप ठहराया, कि हम उस में होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएं।।" 2 कुरिन्थियों 5:21

वह ऐसा क्यों करेगा? क्योंकि :

जिस प्रकार इस संसार के अधिकतार माता–पिता अपने खोए, छीने, भटके हुए बच्चों को वापस पाने के लिए सब कुछ देने के लिए तैयार हो जाते हैं, उसी प्रकार पिता ने अपना पुत्र दे दिया ताकि अपने परिवार को, आपको और मुझको, पुनःप्राप्त कर सके।

आप उसके लिए बहुत बहुमुल्य है।

इस से बड़ा प्रेम किसी का नहीं, कि कोई अपने मित्रों (या, अपने प्रियों) के लिये अपना प्राण दे। यूहन्ना 15:13

परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है, कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिये मरा। रोमियों 5:8

वह परमेश्वर का मेमना है वध किया हुआ मेम्ना ही सामर्थ, और धन, और ज्ञान, और शक्ति, और आदर, और महिमा, और धन्यवाद के योग्य है। (प्रकाशितवाक्य 5:12) क्योंकि तू ने वध होकर अपने लहू से हर एक कुल, और भाषा, और लोग, और जाति में से परमेश्वर के लिये लोगों को मोल लिया है। (प्रकाशितवाक्य 5:9) फिर मैं ने स्वर्ग में, और पृथ्वी पर, और पृथ्वी के नीचे, और समुद्र की सब सृजी हुई वस्तुओं को, और सब कुछ को जो उन में हैं, यह कहते सुना, कि जो सिंहासन पर बैठा है, उसका, और मेम्ने का धन्यवाद, और आदर, और महिमा, और राज्य, युगानुयुग रहे। प्रकाशितवाक्य 5:13

वह ही और केवल वह ही उद्धारकर्त्ता है :

यूहन्ना 14:6 यीशु ने उस से कहा, मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूं; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता।

प्रेरितों के काम 4:12 और किसी दूसरे के द्वारा उद्धार नहीं; क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया, जिस के द्वारा हम उद्धार पा सकें।।

:

उसके द्वारा छुटकारे का मुल्य दिया जाना यह प्रकट करता है कि आप कितने महत्वपूर्ण हैं तथा वह आपसे जो उसकी सन्तान हैं कितना अधिक प्रेम करते हैं।

छुटकारा – मुल्य दे कर अपने स्वामित्व को पुनःस्थापित करना

और अब जब आपको छुड़ाने का इतना बड़ा मुल्य दे दिया गया तथा हमारी सच्ची पहचान की खोज कर ली गई ... अब हमारी भूमिका है :

1 पतरस 1:14–19 और आज्ञाकारी बालकों की नाई अपनी अज्ञानता के समय की पुरानी अभिलाषाओं के सदृश न बनो। (15) पर जैसा तुम्हारा बुलानेवाला पवित्र है (आपका पिता), वैसे ही तुम भी अपने सारे चाल चलन में पवित्र बनो। (16) क्योंकि लिखा है, कि पवित्र बनो, क्योंकि मैं पवित्र हूं। (17) और जब कि तुम, हे पिता, कह कर उस से प्रार्थना करते हो ... (18) क्योंकि तुम जानते हो, कि तुम्हारा निकम्मा चाल-चलन (बिना कि लाभदायक परिणाम के, बिना फल के, व्यर्थ, बिना अर्थ के) जो बापदादों से चला आता है (हमारी संसारिक पहचान) उस से तुम्हारा छुटकारा चान्दी सोने अर्थात् नाशमान वस्तुओं के द्वारा नहीं हुआ। (19) पर निर्दोष और निष्कलंक मेम्ने अर्थात् मसीह के बहुमूल्य लोहू के द्वारा हुआ।

हमारी दो पहचान हैं – दो उत्तराधिकार हैं

1. निरर्थक जीवन की राह – हमारी संसारिक पहचान से उत्तराधिकार में प्राप्त

– तथा –

2. आशिषों का अलौकिक स्वाभाविक बहुतायत का जीवन – हमारे स्वर्गीय पिता से प्राप्त।

आपको क्या चाहिए? आप किसको चुनेंगे?

यह आप पर निर्भर हैं कि आप किस पहचान को जीऐंगे ।

यहां देखें कि पौलुस ने किस प्रकार से किया। वह अपनी पहचान जानता था:

फिलिप्पियों 3:12–15 यह मतलब नहीं, कि मैं पा चुका हूं, या सिद्ध हो चुका हूं: पर उस पदार्थ को पकड़ने के लिये दौड़ा चला जाता हूं, जिस के लिये मसीह यीशु ने मुझे पकड़ा था। (13) हे भाइयों, मेरी भावना यह नहीं कि मैं पकड़ चुका हूं: परन्तु केवल यह एक काम करता हूं, कि जो बातें पीछे रह गई हैं उन को भूल कर, आगे की बातों की ओर बढ़ता हुआ। (14) निशाने की ओर दौड़ा चला जाता हूं, ताकि वह इनाम पाऊं, जिस के लिये परमेश्वर ने मुझे मसीह यीशु में ऊपर बुलाया है।

- हमें अपनी पुरानी पहचान नहीं भूलनी चाहिए, वह ''दलदल की कीच'' जिसमें हम रहते थे।

  भजन 40:2 उस ने मुझे सत्यानाश के गड़हे और दलदल की कीच में से उबारा, और मुझ को चट्टान पर खड़ा करके मेरे पैरों को दृढ़ किया है।

- हमें अपनी पुरानी पहचान को उतार फेंकना है तथा अपनी नई पहचान को पहन लेना है।

- यह वह स्थान है जहां हमें अपना क्रूस उठा कर यीशु के पीछे चलना है।

लूका 9:23 यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो अपने आप से इन्कार करे(अपने पुराने तरीकों, अपने पुराने जीवन, अपनी पुरानी पहचान को ''न'' कहें) और प्रति दिन अपना क्रूस उठाए हुए (मेरा पुराना जीवन, मेरी पुरानी पहचान अब मर गई है) मेरे पीछे हो ले।

कैसे ? गलातियों 2:20 की सच्चाई को सक्रिय बनाएं :

मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूं, और अब मैं जीवित न रहा, पर मसीह मुझ में जीवित है: और मैं शरीर में अब जो जीवित हूं तो केवल उस विश्वास से जीवित हूं, जो परमेश्वर के पुत्र पर है, जिस ने मुझ से प्रेम किया, और मेरे लिये अपने आप को दे दिया।

(''मैं ... क्रूस पर चढ़ाया गया हूं'' - क्रिया काल : **निश्चित भूतकाल** – भूतकाल में हुई क्रिया (जब यीशु को क्रूस पर चढ़ाया गया) निरन्तर रहने वाले परिणामों के साथ। **कर्मप्रधान** – जिसमें मैं क्रिया नहीं करता परन्तु केवल उसे प्राप्त करता हूं। **निश्चयार्थ** – क्रिया व स्थिती निश्चित और पूर्ण है)।

इसे रोमियों 6:4 में भी स्पष्ट किया गया है।

सो उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गए, ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें।

- ''वैसे ही हम भी ... चलें '' इसका आश्वासन नहीं है। इसे अपने जीवन वास्तविक बनाना ... इस पर चलना नए जीवन में चलना, यह सब हम पर निर्भर है।

कैसे? सच्चाई पर विश्वास करके – पुराना मनुष्य – जो मैं था – यीशु के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया, मारा गया, गाड़ा गया था। और अब नया ''मैं'' मरे हुओं में से जिलाया गया है तथा नए जीवन की चाल चल सकता है।

''सकता है'' – का अर्थ है कि यह आप पर निर्भर है कि अपने जीवन में इस सच्चाई को सक्रिय बनाएं।

आपको उस कीच में से बाहर निकाला गया है जहां आप रहते थे।

दुबारा जन्म//जिलाया जाना//ऊंचे पर उठाना। जिस प्रकार उसने लाज़र को नाम लेकर बुलाया उसी प्रकार उसने आप को भी बुलाया है और नए जीवन की चाल के लिए जिलाया है – एक नई पहचान।

आप नए व्यक्तित्व है और हो सकते है। एक नई पहचान!

और इस संसार के सदृश न बनो; परन्तु तुम्हारी बुद्धि के नये हो जाने से तुम्हारा चाल-चलन भी बदलता जाए (रोमियों 12:2)। विश्वास करते और सत्य को ग्रहण करते हुए।

नीतिवचन 23:7 ''क्योंकि जैसा वह अपने आप में विचार करता है, वैसा वह आप है।''

हमारे विचारों को नियंत्रित करने के लिए युद्ध चल रहा है, यह नियंत्रित करने के लिए कि हम अपने बारे में क्या विश्वास करते हैं।

2 कुरिन्थियों 10:4–5 क्योंकि हमारी लड़ाई के हथियार शारीरिक नहीं, पर गढ़ों को (जो मैं सोचता हूं वही मैं हूं) ढा देने के लिए परमेश्वर के लिए द्वारा सामर्थी है। सो हम कल्पनाओं को, और हर एक ऊंची बात को, जो परमेश्वर की पहचान (जैसे कि आप कौन हैं) के विरोध में उठती है, खण्डन करते हैं; और हर एक भावना को कैद करके मसीह का आज्ञाकारी बना देते हैं।

हमें अपने कम्पयूटर को (अपने दिमाग को) दुबारा प्रोग्राम करने की आवश्यकता है।

अपनी पहचान जानने से हम रुपान्तरित हो जाते है।

इफिसियों 4:17–5:21 इसको इस प्रकार से कहता है

(17) जैसे अन्यजातीय लोग (आप उनमें से एक नहीं हो) अपने मन की अनर्थ की रीति पर चलते हैं, तुम अब से फिर ऐसे न चलो।(18) क्योंकि उनकी बुद्धि अन्धेरी हो गई है और उस अज्ञानता के कारण जो उन में है ... (22) कि तुम अगले चालचलन (व्यर्थ) के पुराने मनुष्यत्व (पुरानी पहचान) को जो भरमानेवाली अभिलाषाओं के अनुसार भ्रष्ट होता जाता है, उतार डालो।(23) और अपने मन के आत्मिक स्वभाव में नये बनते जाओ (जो कि आप वास्तव में हैं आपकी सच्ची पहचान)। और नये मनुष्यत्व को पहिन लो, (आपकी नई पहचान) जो परमेश्वर के अनुसार सत्य की धार्मिकता (जो सही और उचित है केवल वही करना), और पवित्रता में (पाप से अलग किया हुआ) सृजा गया है।।

- यह आपकी सच्ची पहचान है : धार्मिकता और पवित्रता

(5:1) इसलिये प्रिय, बालकों की नाई परमेश्वर के सदृश (इस संसार के सदृश नहीं) बनो। (कैसे ? जिस प्रकार बच्चा अपने पिता को देखता है, उसको सुनता है, उसका अनुसरण करता है, उससे सीखता है जैसे आदम ने वाटिका में किया था)

(5:2) और प्रेम में चलो(कैसे ?) ; जैसे मसीह ने भी तुम से प्रेम किया; और हमारे लिये अपने आप को सुखदायक सुगन्ध के लिये परमेश्वर के आगे भेंट करके बलिदान कर दिया।

- ठीक वैसे ही जैसे हम फिलिप्पियों 2:6–8
- यह जानने के लिए कि प्रायोगिक रीति से हमें क्या करना चाहिए, रोमियों 12:9–21 देखें।

हमे इस सत्य को, जो कि हम असल में हैं मानना चाहिए

– तथा –

हमें अपनी वास्तविक पहचान के प्रति ईमानदार होना चाहिए

हमारी पहचान हमें अपने पिता, और अपने परिवार की ओर उत्तरदायी बनाती है।

गलातियों 5 (19) शरीर के काम (स्वभाव, इस संसार की संस्कृति, आपका पुराना मनुष्यत्व) तो प्रगट हैं, अर्थात् व्यभिचार, गन्दे काम, लुचपन। (20) मूर्त्ति पूजा, टोना, बैर, झगड़ा, ईर्ष्या, क्रोध, विरोध, फूट, विधर्म। (21) डाह, मलवालापन, लीलाक्रीड़ा, और इन के ऐसे और और काम हैं, इन के विषय में मैं तुम को पहिले से कह देता हूं जैसा पहिले कह भी चुका हूं, कि ऐसे ऐसे काम करनेवाले (जो बार बार या आदतन् किया जाए) परमेश्वर के राज्य के वारिस न होंगे।

आप राजकुमार और राजकुमारी के समान है तथा अपने उत्तराधिकार का आनन्द लेने के लिए आवश्यक है कि आप राज्य के भीतर ... रहें।

यदि नहीं तो आप ने इस संसार के राज्य में अपनी पुरानी पहचान के द्वारा जीए जाने को चुना है। तथा आप ''उस दुष्ट'' को अवसर दे रहे हैं कि आप पर आक्रमण करे।

आज अपनी वास्तविक मीरास का उपभोग करने के लिए हमें अपनी सच्ची पहचान पर – कार्य करना है – अभ्यास करना है – बार– बार और आदतन् उसका प्रयोग करना चाहिए ... '' तेरी इच्छा जैसी स्वर्ग में पूरी होती है, वैसे पृथ्वी पर भी हो। ''

(22) पर आत्मा का फल (स्वभाव, हमारी सच्ची पहचान की संस्कृति) प्रेम, आनन्द, मेल, धीरज, (23) और कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता, और संयम हैं; ऐसे ऐसे कामों के विरोध में कोई व्यवस्था नहीं।

- यह है जिसको हमें प्रयोग में लाना चाहिए
- यह है जिसके लिए हमें कठिन परिश्रम करना चाहिए ताकि हमारे कार्यों/ हमारी प्रतिक्रियाओं/ हमारे प्रतिउत्तरों/ और हमारी सोच में बदलाव आए।

1 यूहन्ना 3:7 हे बालको, किसी के भरमाने में न आना; जो धर्म के काम करता है, वही उस की नाई धर्मी है।

(रोमियों 3:22; 2 कुरिन्थियों 5:21 भी देखें)

रोमियों 12:2 यह कहता है:

और इस संसार के सदृश न बनो(हम इस संसार के नहीं); परन्तु तुम्हारी बुद्धि के नये हो जाने से तुम्हारा चाल-चलन भी बदलता जाए (उसमें जो आप वास्तव में हैं), जिस से तुम परमेश्वर की भली, और भावती, और सिद्ध इच्छा अनुभव से मालूम करते रहो।।

जैसी आपकी सच्ची पहचान है।

सो यदि आप मसीह में है तो आप नई सृष्टि हैः आपकी पुरानी पहचान समेत पुरानी बातें बीत गई हैं; देखो, वे सब नई हो गई। (2 कुरिन्थियों 5:17 से लिया गया)

कुलुस्सियों 1:12–13 और पिता का धन्यवाद करते रहो, जिस ने हमें इस योग्य बनाया कि ज्योति में (अन्धकार में नहीं) पवित्र लोगों के साथ मीरास में सहभागी हों। उसी ने हमें अन्धकार के वश से छुड़ाकर अपने प्रिय पुत्र के राज्य में प्रवेश कराया।

- राज्य के नागरिक के समान रहें।

हम योग्य बनते हैं (1) जन्म के द्वारा और (2) मेमने, यीशु मसीह के लहू के द्वारा छुड़ाए जा कर, जिसने हमसे प्रेम किया और अपने आप को हमारे लिए दे दिया।

जो आप हैं वही बनें

1 यूहन्ना 2:28 –3:3

निदान, हे बालको, उस में बने रहो(उसके राज्य में); कि जब वह प्रगट हो, तो हमें हियाव हो, और हम उसके आने पर उसके साम्हने लज्जित न हों। यदि तुम जानते हो, कि वह धार्मिक है, तो यह भी जानते हो, कि जो कोई धर्म का काम करता है, वह उस से जन्मा है।

देखो पिता ने हम से कैसा प्रेम दिया है, कि हम परमेश्वर की सन्तान कहलाएं, और हम हैं भीः इस कारण संसार हमें नहीं जानता, क्योंकि उस ने उसे भी नहीं जाना।हे प्रियों, अभी हम परमेश्वर की सन्तान हैं, और अब तक यह प्रगट नहीं हुआ, कि हम क्या कुछ होंगे! इतना जानते हैं, कि जब वह प्रगट होगा तो हम भी उसके समान होंगे, क्योंकि उस को वैसा ही देखेंगे जैसा वह है। और जो कोई उस पर यह आशा रखता है(उसके समान होने की), वह अपने आप को वैसा ही पवित्र करता है, जैसा वह पवित्र है।

उसने जगत की उत्पत्ति से पहले – आपको चुन लिया

इफिसियों 1:4 उस ने हमें जगत की उत्पति से पहिले उस में चुन लिया, कि हम उसके निकट प्रेम में पवित्र और निर्दोष हों।

और उस समय :

उसने जीवन की पुस्तक में आपका नाम आरम्भ से ही लिख दिया।

प्रकाशितवाक्य 13:8 तथा 17:8 पृथ्वी के रहनेवाले जिन के नाम जगत की उत्पत्ति के समय से मेम्ने की जीवन की पुस्तक में लिखे ... जो घात हुआ है

स्वर्ग की नागरिकता आपकी सर्वप्रथम है। आप इस संसार के नहीं हैं।

फिलिप्पियों 3:20 परन्तु हमारी नागरिकता स्वर्ग की है

इब्रानियों 11:13 हम पृथ्वी पर परदेशी और बाहरी हैं।

जगत की उत्पत्ति से पहले, इससे पहले कि आपका जन्म होता, आपको चुन लिया गया – नाम दिया गया तथा स्वर्ग के नागरिक के समान नामांकन हुआ।

आप उसकी योजना थे। आप उसकी संतान हैं !

आप वह बनें जो आप हैं !

उसके शिष्य:

यूहन्ना 13:35 यदि आपस में प्रेम रखोगे तो इसी से सब जानेंगे, कि तुम मेरे चेले हो।।

उसके सेवक और भण्डारी:

1 कुरिन्थियों 4:1–2 मनुष्य हमें मसीह के सेवक और परमेश्वर के भेदों के भण्डारी समझे। (2) फिर यहां भण्डारी में यह बात देखी जाती है, कि विश्वास योग्य निकले।

यूहन्ना 13:14 यदि मैं ने प्रभु और गुरू होकर तुम्हारे पांव धोए; तो तुम्हें भी एक दुसरे के पांव धोना चाहिए।

लूका 12:42 प्रभु ने कहा; वह विश्वासयोग्य और बुद्धिमान भण्डारी कौन है, जिस का स्वामी उसे नौकर चाकरों पर सरदार ठहराए कि उन्हें समय पर सीधा दे।

उसके सेवक

2 कुरिन्थियों 5:18–19 और सब बातें परमेश्वर की ओर से हैं, जिस ने मसीह के द्वारा अपने साथ हमारा मेल मिलाप की सेवा हमें सौंप दी है।(19) अर्थात् परमेश्वर ने मसीह में होकर अपने साथ संसार का मेल मिलाप कर लिया, और उन के अपराधों का दोष उन पर नहीं लगाया और उस ने मेल मिलाप का वचन हमें सौंप दिया है।।

जिम्मेवारी : लूका 10:16 जो तुम्हारी सुनता है, वह मेरी सुनता है, और जो तुम्हें तुच्छ जानता है, वह मुझे तुच्छ जानता है; और जो मुझे तुच्छ जानता है, वह मेरे भेजनेवाले को तुच्छ जानता है।

उसके राजदूत

2 कुरिन्थियों 5:20 हम मसीह के राजदूत हैं

राजदूत होने के नाते हमारी जिम्मेवारी है / हमें राजा के लिए बोलने का आदेश प्राप्त है /हम जिस विदेशी राज्य में रहते हैं वहां के नियमों और शक्तियों से उन्मुक्ति है।

उसके मिशनरी

मरकुस 16:15–18 तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो। (17) और विश्वास करनेवालों में ये चिन्ह होंगे कि वे मेरे नाम से दुष्टात्माओं को निकालेंगे। (18) नई नई भाषा बोलेंगे, सांपों को उठा लेंगे, और यदि वे नाशक वस्तु भी पी जांए तौभी उन की कुछ हानि न होगी, वे बीमारों पर हाथ रखेंगे, और वे चंगे हो जाएंगे।

और क्या हमारे भीतर भय तथा / या नाकारात्मक दृष्टिकोण उठ सकता है, मत्ती 28:20 : और देखो, मैं जगत के अन्त तक सदैव तुम्हारे संग हूं।।

यह आज्ञा न केवल हमें अपनी पहचान देता है परन्तु अधिकार भी देता है:

लूका 10:17–20 हे प्रभु, तेरे नाम से दुष्टात्मा भी हमारे वश में है।(18) उस ने उन से कहा; मैं शैतान को बिजली की नाई स्वर्ग से गिरा हुआ देख रहा था।(19) देखो, मैंने तुम्हे सांपों और बिच्छुओं को रौंदने का, और शत्रु की सारी सामर्थ पर अधिकार दिया है; और किसी वस्तु से तुम्हें कुछ हानि न होगी।(20) तौभी इस से आनन्दित मत हो, कि आत्मा तुम्हारे वश में हैं, परन्तु इस से आनन्दित हो कि तुम्हारे नाम स्वर्ग पर लिखे हैं।।

और जिम्मेवारी: मत्ती 24:14 राज्य का यह सुसमाचार सारे जगत में प्रचार किया जाएगा, कि सब जातियों पर गवाही हो, तब अन्त आ जाएगा।।

- यीशु और समस्त सृष्टि हमारी प्रतिक्षा में हैं कि हम अपना कार्य समाप्त करें।

इस पृथ्वी पर उसकी परियोजना के प्रबन्धक, उसके सहकर्मी (1 कुरिन्थियों 3:9 +)

उत्पत्ति 1:27–28 तब परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार उत्पन्न किया ... (28) परमेश्वर ने उनको आशीष दी : और उन से कहा, फूलो-फलो, और पृथ्वी में भर जाओ, और उसको अपने वश में कर लो; और समुद्र की मछलियों, तथा आकाश के पक्षियों, और पृथ्वी पर रेंगनेवाले सब जन्तुओ पर अधिकार रखो।

1 कुरिन्थियों 3:9–15 क्योंकि हम परमेश्वर के सहकर्मी हैं ... (10) परमेश्वर के उस अनुग्रह के अनुसार, जो मुझे दिया गया, मैं ने बुद्धिमान राजमिस्त्री की नाईं नेव डाली, और दूसरा उस पर रद्दा रखता है; परन्तु हर एक मनुष्य चौकस रहे, कि वह उस पर कैसा रद्दा रखता है।

आपको चुना गया है तथा कार्य सौंपा गया है

यूहन्ना 15:16 तुम ने मुझे नहीं चुना परन्तु मैं ने तुम्हें चुना है और तुम्हें ठहराया ताकि तुम जाकर फल लाओ; और तुम्हारा फल बना रहे, कि तुम मेरे नाम से जो कुछ पिता से मांगो, वह तुम्हें दे।

यूहन्ना 15:19 यदि तुम संसार के होते, तो संसार अपनों से प्रीति रखता, परन्तु इस कारण कि तुम संसार में से चुन लिया है इसी लिये संसार तुम से बैर रखता है।

आपको क्षमा किया गया है

1 यूहन्ना 2:12 हे बालको, मैं तुम्हें इसलिये लिखता हूं, कि उसके नाम से तुम्हारे पाप क्षमा हुए।

प्रेरितों के काम 10:43 जो कोई उस पर विश्वास करेगा, उस को उसके नाम के द्वारा पापों की क्षमा मिलेगी।।

प्रेरितों के काम 13:38 इसलिये, हे भाइयो; तुम जान लो कि इसी के द्वारा पापों की क्षमा का समाचार तुम्हें दिया जाता है।

आप धर्मी ठहराए गए हैं

रोमियों 5:1–2 सो जब हम विश्वास से धर्मी ठहरे, तो अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ मेल रखें।

आप धर्मी हैं

रोमियों 3:22 परमेश्वर की वह धार्मिकता, जो यीशु मसीह पर विश्वास करने से सब विश्वास करनेवालों के लिये है; क्योंकि कुछ भेद नहीं।

रोमियों 4:5 परनतु जो काम नहीं करता वरन भक्तिहीन के धर्मी ठहरानेवाले पर विश्वास करता है, उसका विश्वास उसके लिये धार्मिकता गिना जाता है।

आप पवित्र किए गए हैं इसलिए सन्त हैं।

1 कुरिन्थियों 1:2 परमेश्वर की उस कलीसिया के निाम जो कुरिन्थुस में है, अर्थात् उन के नाम जो मसीह यीशु में पवित्र किए गए, और पवित्र होने के लिये बुलाए गए हैं

इब्रानियों 10:10 उसी इच्छा से हम यीशु मसीह की देह के एक ही बार बलिदान चढ़ाए जाने के द्वारा पवित्र किए गए हैं।

इब्रानियों 10:14 क्योंकि उस ने एक ही चढ़ावे के द्वारा उन्हें जो पवित्र किए जाते हैं, सर्वदा के लिये सिद्ध कर दिया है।

हम परमेश्वर के याजक हैं : चुने गए और विशेष

1 पतरस 2:9 परन्तु तुम एक चुना हुआ वंश, राजकीय याजकों का समाज, एक पवित्र प्रजा, और परमेश्वर की निज सम्पत्ति हो, जिस से तुम उसके महान गुणों को प्रकट करो जिसने तुम्हें अंधकार से अपनी अद्‌भुत ज्योति में बुलाया है।

पवित्र प्रजा (यूनानी एथ्नोस – बाकी सभी से भिन्न या विशेष समुह)

हम यह हैं। यह हमारी पहचान है।

1 पतरस 2:11 हे प्रियों मैं तुम से विनती करता हूं, कि तुम अपने आप को परदेशी और यात्री जानकर उस सांसारिक अभिलाषाओं से जो आत्मा से युद्ध करती हैं, बचे रहो।

बचे रहो क्योंकि आप यह नहीं हैं, आप जातिय समुह से भिन्न हैं, एक भिन्न संस्कृति, अलग DNA

इसलिएः

तुम न तो संसार से और न संसार में की वस्तुओं से प्रेम रखो 1 यूहन्ना 2:15

अन्यजातियों (दूसरे जातिय समुह) की चाल को मत सीखो ... (3) लोगों की प्रथाएं तो छलावा है यर्मयाह 10:2–3

क्योंकिः इसलिये तुम अब विदेशी और मुसाफिर नहीं रहे, परन्तु पवित्र लोगों के संगी स्वदेशी और परमेश्वर के घराने के हो गए। इफिसियों 2:19

जैसे उन्होंने किया, वैसे ही हमें भी करना हैः और उन्हों ने ... मान लिया, कि हम पृथ्वी पर परदेशी और बाहरी हैं।(14) जो ऐसी ऐसी बातें कहते हैं, वे प्रगट करते हैं, कि स्वदेश की खोज में हैं।(15) और जिस देश से वे निकल आए थे, यदि उस की सुधि करते तो उन्हें लौट जाने का अवसर था।(16) पर वे एक उत्तम अर्थात् स्वर्गीय देश के अभिलाषी हैं, इसी लिये परमेश्वर उन का परमेश्वर कहलाने में उन से नहीं लजाता, सो उस ने उन के लिये एक नगर तैयार किया है।। इब्रानियों 10:13–16

मत्ती 5:13 तुम पृथ्वी के नमक हो। **जो आप हैं वो बनें**

परन्तु यदि नमक का स्वाद बिगड़ जाए, तो वह फिर किस वस्तु से नमकीन किया जाएगा ?

मत्ती 5:14 तुम पृथ्वी के नमक हो। **जो आप हैं वो बनें**

- तुम्हारा उजियाला मनुष्यों के साम्हने चमके कि वे तुम्हारे भले कामों को देखकर तुम्हारे पिता की, जो स्वर्ग में हैं, बड़ाई करें।।
- न और कुछ ऐसा कर, जिस से तेरा भाई ठोकर खाए। रोमियों 14:21

प्रेरितों के काम 15:17 इसलिये कि शेष मनुष्य, अर्थात् सब अन्यजाति जो मेरे नाम के कहलाते हैं...

हमारा पारिवारिक नाम को ''प्रेम'' कहा जा सकता है

परमेश्वर प्रेम हैः जो प्रेम में बना रहता है, वह परमेश्वर में बना रहता है; और परमेश्वर उस में बना रहता है।(17) इसी से प्रेम हम में सिद्ध हुआ। 1 यूहन्ना 4:16–17

जिस प्रकार ''प्रेम'' है – उसी प्रकार पिता भी है। जिस प्रकार पिता है – हम भी हैं।

प्रेम धीरजवन्त है– और कृपाल है– प्रेम डाह नहीं करता– प्रेम अपनी बड़ाई नहीं करता – और फूलता नहीं– वह अनरीति नहीं चलता– वह अपनी भलाई नहीं चाहता– झुंझलाता नहीं– बुरा नहीं मानता – कुकर्म से आनन्दित नहीं होता – सत्य से आनन्दित होता है– वह सब बातें सह लेता है– सब बातों की प्रतीति करता है– सब बातों की आशा रखता है– सब बातों में धीरज धरता है– प्रेम कभी टलता नहीं
1 कुरिन्थियों 13:4–8

1 पतरस 4:8 प्रेम अनेक पापों को ढांप देता है। यीशु ने सब पापों को ढांप लिया।

हमें प्रेम में बने रहना है – प्रेम से जीना है – अपने परिवार के नाम को– अपने पिता को – महिमा और आदर देना है।